महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University

A State University Established Under Uttar Pradesh State University Act 1973

(Accredited A^{++} by NAAC)

गोरख पथ

त्रैमासिक

ई-पत्रिका

वर्ष-1, अंक-1, दिसम्बर 2023

प्रकाशक: महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

ई-पत्रिका

वर्ष-1, अंक-1,दिसम्बर 2023

गोरख पथ

संरक्षक

प्रो. पूनम टंडन

कुलपति

(दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

सम्पादक

डॉ. कुशल नाथ मिश्रा

उप-निदेशक

सह सम्पादक

डॉ. सोनल सिंह

सहायक-निदेशक

डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी

सहायक-ग्रन्थालयी

डॉ. सुनील कुमार

रिसर्च एसोसिएट

संपादन सहयोग

हर्षवर्धन सिंह — वरिष्ठ शोध अध्येता

प्रिया सिंह — कनिष्ठ शोध अध्येता

कुँ. रणन्जय सिंह — कनिष्ठ शोध अध्येता

चिन्मयानन्द मल्ल

शुभाकांक्षा

कुलपति

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के स्थापना दिवस के अवसर पर मुझे ई-पत्रिका 'गोरख पथ' के विमोचन का गौरव प्राप्त हुआ था। यह पत्रिका शोधपीठ के योगिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का प्रयास, विस्तार एवं विकास को प्रतिबिम्बित करता है। योजना की संकल्पना करने से लेकर सावधानीपूर्वक आदर्शरूप से कार्यान्वित करने तक की पूरी प्रक्रिया रचनात्मकता और अटूट समर्पण के प्रमाण के रूप में स्थापित है। मैं न केवल अनुसंधान को बढ़ावा देने बल्कि सर्वांगीण विकास के पथ पर अग्रसर होने के प्रयासों के लिए शोधपीठ की हार्दिक सराहना करती हूं। यह शैक्षणिक यात्रा, शोधपीठ के भीतर असाधारण कौशल का एक सच्चा प्रमाण है, निस्संदेह यह ई-पत्रिका शोधपीठ के गतिविधियों से युक्त अत्यधिक उर्जा के साथ जारी रहनी चाहिए। मैं स्थापना दिवस समारोह के दौरान व्यक्त की गई विचारों एवं भावनाओं को प्रतिफलित होते हुए देखने के लिए उत्सुक हूं। मैं शुभकामनाएं देती हूं कि शोधपीठ निरन्तर प्रगति की ओर बढ़े।

सम्पादक की कलम से

उप-निदेशक

नाथ पंथ के मुख्य स्तम्भ गोरखनाथ मंदिर के वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित महयोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ ने अपने स्थापना के पांच साल पूरे कर लिए हैं। देश विदेश में नाथ परंपरा के शैक्षणिक अध्ययन हेतु शोधपीठ ने अपनी सार्थक शैक्षणिक उपस्थिति दर्ज कराते हुए भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के क्षेत्र में नाथ पंथ के योगदानों एवं विमर्श को लेकर शैक्षणिक जगत में अनुकरणीय पहल का प्रयास किया है। इस पीठ ने अपने मुख्य उद्देश्यों नाथ दर्शन एवं योग के साधना को लेकर उत्कृष्टता, मौलिकता एवं रचनात्मकता के साथ अपनी गतिविधियों को आगे बढ़ाया है। शोधपीठ आशा करता है कि वर्तमान माननीय कुलपति महोदया के मार्गदर्शन और सक्रिय भूमिका से पूरी ताकत से आगे बढ़ें और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करे और जिस उद्देश्य के लिए इस शोधपीठ की स्थापना की गयी है उसको प्राप्त करे। ई-पत्रिका 'गोरख पथ' के प्रथम अंक सितंबर से दिसम्बर 2023 तक शोधपीठ की गतिविधियों को संकलित किया गया है। मैं यह ई-पत्रिका उन सभी विद्वत जनों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो सामान्य रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा में और विशेष रूप से नाथ दर्शन में रुचि रखते हैं।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम द्वारा 1957 में आजादी के बाद उत्तर प्रदेश में स्थापित होने वाला पहला विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय ने अपनी लंबी यात्रा में लगातार अपने आदर्श वाक्य, ''आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः'' (सभी दिशाओं से कल्याणकारी विचार मेरे पास आएं) के अनुसार लोगों ने विविध विचारों और विश्वासों को आत्मसात किया। विश्वविद्यालय की भौगोलिक स्थिति 26.7480 डिग्री उत्तर (अक्षांश), 83.3812 डिग्री पूर्व (देशांतर) है। इस विश्वविद्याल को भगवान बुद्ध, कबीर और गुरु गोरखनाथ, बिस्मिल, हनुमान प्रसाद पोद्दार और गीता प्रेस की आध्यात्मिक, दार्शनिक, देशभक्ति और परोपकारी भावना विरासत में मिली है। 190.96 एकड़ में फैले, इस विश्वविद्यालय में 32 विभागों से युक्त सात संकाय हैं, जिन्होंने अपनी स्थापना के बाद से पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार और नेपाल के लोगों को समग्र शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक आवासीय-सह-संबद्ध राज्य विश्वविद्यालय के रूप में, जिसका शैक्षणिक क्षेत्राधिकार पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन जिलों में फैला हुआ है, यह एक समृद्ध शैक्षणिक विरासत अनुभवी, योग्य और समर्पित संकाय सदस्यों, पारदर्शी और प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था, पुस्तकालय, पर्याप्त कैरियर विकास के अवसर, उन्नत अनुसंधान सुविधाएं और एक जीवंत और सुरक्षित परिसर के साथ विकास के पथ पर गतिमान है।

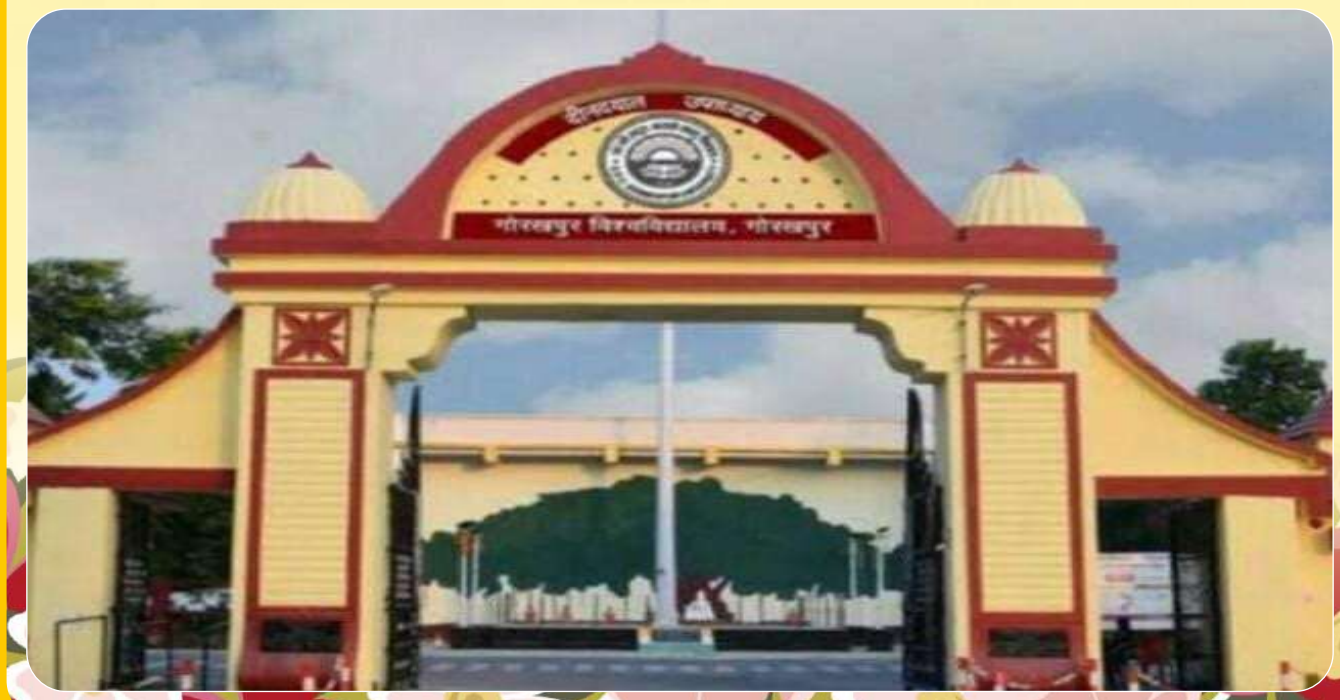

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

भगवान बुद्ध की उदात्त करुणा, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ की तप-साधना, सन्त-प्रवर कबीर की युगान्तकारी वैचारिकी, द्वारा ही मुख्य रूप से विश्वविद्यालयीय परिक्षेत्र के लोकचित का निर्माण हुआ है। गोरखपुर शहर में नाथपंथ का सर्वोच्च अधिष्ठान- श्रीगोरखनाथ मंदिर-स्थित है जो महायोगी श्रीगोरखनाथ की तपोभूमि है और यही पर वे समाधिस्थ हुए। श्रीगोरखनाथ मंदिर को एक सिद्धपीठ होने की मान्यता के साथ-साथ आस्था एवं अर्चना के प्रमुख केन्द्र के रूप में ख्याति है। श्रीगोरक्षपीठ के पूज्य पीठाधीश्वरों ने समरस समाज के निर्माण में, हिन्दू-संस्कृति के पुनरूद्धार में अभूतपूर्व योगदान दिया है। गोरखपुर के बौद्धिक परिवेश में दीर्घकाल से यह अन्तर्भूत भाव प्रवाहमान रहा है कि नाथपंथ के दार्शनिक, सार्वभौमिक सिद्धांतों एवं अनुप्रयोगों को जन-मन तक संचारित करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन-केन्द्र की स्थापना हो। महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के स्थापना से यही भाव मूर्तरूप लिया है।

उत्तर प्रदेश शासन के उच्च शिक्षा अनुभाग-4 के शासनादेश संख्या-1090/सत्तर-4-2018-106 (4-शोधपीठ)/2018, दिनांक 06-08-2018 द्वारा माननीय राज्यपाल के द्वारा दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना की गयी।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ का शिलान्यास गोरक्षपीठाधीश्वर महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज, माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश शासन के कर कमलों द्वारा 30 नवंबर 2018 को हुआ। शिलान्यास के इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष प्रो0 धीरेन्द्र पाल सिंह, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रो0 विजय कृष्ण सिंह एवं पूर्व कुलपति प्रो0 राजेश सिंह का सानिध्य प्राप्त हुआ।

3 जनवरी 2023 को मोहन सिंह भवन से शोधपीठ विश्वविद्यालय के महाराणा प्रताप परिसर में निर्मित भवन में स्थानान्तरित हुआ। इस नव निर्मित शोधपीठ का निर्माण उ.प्र. सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा किया गया। इस भवन में पुस्तकालय, संग्रहालय, संगोष्ठी एवं सम्मेलन कक्ष, दृश्य-श्रव्य कक्ष, प्रकाशन हेतु संगणक कक्ष, अतिथि गृह के साथ साथ शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर पदधारको के अतिरिक्त सामान्य प्रशासन कार्यालय की भी व्यवस्था है। महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के इस नवीन भवन में 13 जनवरी 2023 को नैक पियर टीम का विश्वविद्यालय के मूल्यांकन हेतु आगमन एवं निरीक्षण हो चुका है। इस नैक पियर टीम के मूल्यांकन में विश्वविद्यालय को A++ ग्रेड प्राप्त हुआ है।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना का उद्देश्य यत्र-तत्र विकीर्ण मन्तव्यों एवं उपदेशों को समेकित कर विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करना है। गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थापित यह शोध-संस्थान जिज्ञासुओं की तात्विक-चिन्तन में अभिवृद्धि के साथ-साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी संचारित कर रहा है।

कुलपति महोदया का शोधपीठ में प्रथम आगमन

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने 21 सितंबर गुरुवार को महाराणा प्रताप परिसर स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ भवन का निरीक्षण किया। आपने स्थापना के बाद हुए कार्यों तथा आगामी योजनाओं की रूपरेखा की जानकारी ली। शोधपीठ को नाथपंथ के जीवंत केंद्र के रूप में विकसित करने का निर्देश दिया।

निरीक्षण के बाद कुलपति ने शोधपीठ के उप निदेशक, सहायक निदेशक तथा शोधकर्ताओं के साथ बैठक की। कुलपति महोदया ने नाथपंथ पर मौलिक शोध कार्य करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि गोरखपुर शहर नाथपंथ का प्रमुख केंद्र है। ऐसे में शोधपीठ नाथपंथ पर आधारित सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियां आयोजित करे। धर्म, नैतिकता एवं दर्शन की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में शोधपत्र प्रकाशित करे। उन्होंने शोध अध्येताओं को स्कोपस इंडेक्स में शोध पत्र प्रकाशित करने को कहा।

प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि शोधपीठ में संसाधनों की कमी को शीघ्र ही पूरा किया जाएगा। शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र द्वारा कुलपति के समक्ष 2018 में शोधपीठ की स्थापना के बाद सम्पन्न कार्यों तथा आगामी कार्ययोजना की रूपरेखा पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। बैठक में कुलसचिव प्रो. शान्तनु रस्तोगी, सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह, डा. मनोज द्विवेदी, डा. सुनील कुमार, हर्षिता, प्रिया, हर्षवर्धन, कुँवर रणंजय, चिन्मयानन्द मल्ल आदि मौजूद रहे। शोधपीठ में शीघ्र ही भारत-नेपाल में चल रहे नाथ पंथ से संबंधित कार्यों का संकलन करने, नाथ पंथ पर आधारित इनसाइक्लोपीडिया पर कार्य करने के साथ ही विभिन्न अवधि के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रमों का शुभारम्भ किया जाएगा।

दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती

दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की 107वीं जयंती के स्मृति में 25 सितम्बर 2023 को विश्वविद्यालय परिसर स्थित संवाद भवन में ''एकात्म मानवदर्शन एक सम्पूर्ण विचार'' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती एवं पं दीनदयाल उपाध्याय जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के संगीत विभाग की छात्र-छात्राओं द्वारा कुलगीत प्रस्तुति की गयी। अतिथियों का स्वागत श्रीफल, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर किया गया। अतिथियों का परिचय एवं संगोष्ठी की प्रस्ताविकी दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के निदेशक डा0 कुशल नाथ मिश्रा जी द्वारा प्रस्तुत किया गया।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता के रूप में श्री सुभाष जी, प्रांत प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, गोरक्षप्रांत ने अपने उद्बोधन में दीन दयाल उपाध्याय जी के जीवन एवं चरित्र को बताते हुए एकात्म मानववाद दर्शन पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि पं. दीनदयाल जी का विचार व्यक्तिगत नहीं है, भारत का विचार है और भारत का विचार सनातन संस्कृति का विचार है। दुनिया टुकड़ो-टुकड़ो में विचार करता है तो भारत समग्रता से विचार करता है। भारत का विचार लोक मंगल का विचार है। आज के परिप्रेक्ष्य में उसको जानना आवश्यक है। उन्होनें कहा कि दीनदयाल जी का विचार एकात्म मानवदर्शन है। एकात्म मानववाद का अर्थ लोक कल्याण का काम है। राष्ट्रभाव का उदय और विश्व कल्याण की भावना ही एकात्म मानवदर्शन है। उन्होने यह भी कहा की दीनदयाल जी के विचारों में संकीर्णता नहीं थी। दुनिया के हर अच्छी बात को वे ग्रहण करते थे और उसका परिष्कार करते थे। दीनदयाल जी कहते थे कि विदेशों की बातों को अगर ग्रहण करना है तो उसे स्वदेशानुकुल बना कर ग्रहण करना होगा। श्री सुभाष जी ने अर्थ पुरूषार्थ के बारे में कहा कि अर्थ का अभाव नहीं चाहिए तथा अर्थ का प्रभाव भी नहीं चाहिए। काम और अर्थ दोनो धर्म पुरूषार्थ के अधीन होना चाहिए।

इस संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन जी ने कहा कि यह दिन हमारे लिए विशेष है। दीनदयाल उपाध्याय जी का जीवन बहुत कठिन रहा है। उनसे प्रेरणा लेते हुए हमारा जीवन कितना भी कठिन क्यों न हो उनके विचारों पर चलकर हम कुछ भी कर सकते हैं। साथ ही इसी प्रकार सभी महापुरुषों को विश्वविद्यालय के पाठ्क्रम में सम्मिलित किया जाए तथा यह शोधपीठ भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाते हुए दीनदयाल जी के विचारों को आगे लेकर जाए। दीनदयाल जी के जन्म दिवस पर हम उन्हें कोटि-कोटि नमन करते हैं। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त संकायाध्यक्षगण, अधिष्ठातागण, शिक्षकगण, सम्बद्ध महाविद्यालयों के शिक्षकगण, कर्मचारीगण एवं छात्र-छात्राएं भारी संख्या में उपस्थित रहे।

गोरखनाथ मंदिर का शैक्षणिक भ्रमण

नाथ-पंथ के दर्शन, अवदानों तथा नाथ-पंथ की दार्शनिक पृष्ठभूमि और व्यावहारिकता को जानने एवं समझने के उद्देश्य से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की अधिकृत टीम ने 10 अक्टूबर को श्री गोरखनाथ मंदिर का एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया। गोरखनाथ मंदिर परिसर स्थित महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार के समान ही महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में भी गोरखनाथ जी द्वारा रचित गोरखबानी अंकित किए जाने की योजना बनाई गयी। टीम ने शैक्षणिक भ्रमण के दौरान नाथ पंथ से संबंधित विभिन्न गूढ़ विषयों से संबंधित जानकारी हासिल किया तथा साथ ही गोरखनाथ मंदिर के योगी सोमनाथ से संवाद कर नाथपंथ की दार्शनिक पृष्ठभूमि के बारे में भी जाना। टीम में शोधपीठ की सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह के निर्देशन में शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, वर्षा रानी तथा हर्षिता कौशिक ने मंदिर परिसर का भ्रमण कर गोरखबानी का चित्र प्राप्त किया तथा धूना पर विराजें पुजारी से पवित्र धूना के इतिहास को जाना।

पुस्तकों की सूची का संकलन

पुस्तकालय के लिए नाथ पंथ दर्शन, धर्म, योग, संस्कृति एवं भारतीय ज्ञान परम्परा से संबंधित पुस्तकों की सूची का संकलन रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा हर्षवर्धन सहित शोध अध्येताओं की सहायता से तैयार किया गया।

राज्य संग्रहालय निदेशालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश के पूर्व निदेशक का भ्रमण

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध पीठ में उच्च स्तरीय नाथ पंथ संग्रहालय की स्थापना हेतु राज्य संग्रहालय निदेशालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश के पूर्व निदेशक डॉ. ए. के. सिंह ने अपनी टीम के साथ 10 अक्टूबर 2023 को निरीक्षण किया। शोधपीठ में प्रस्तावित संग्रहालय में नाथ पंथ से संबंधित समस्त देश-विदेश में उपलब्ध पांडुलिपियों, गोरखनाथ तथा नवनाथ से संबंधित चित्रावली, नाथ योगियों की वेश भूषा, दुर्लभ प्राचीन वस्तुएं एवं अन्य उपलब्ध सामग्रियों का संग्रह होना है. इसी क्रम में डॉ. सिंह ने शोधपीठ का स्थलीय निरीक्षण किया तथा आवश्यक सुझाव दिए। निरीक्षण के दौरान डॉ. कुशल नाथ मिश्र, उप-निदेशक के साथ सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, हर्षवर्धन सहित समस्त शोध अध्येता उपस्थित रहे।

पुस्तकालय का शुभारम्भ

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की पुस्तकालय का शुभारंभ दिनांक 16 अक्टूबर को कुलपति प्रो. पूनम टंडन द्वारा किया गया। शोधपीठ के उप-निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्रा द्वारा पुष्प गुच्छ देकर कुलपति महोदया का स्वागत किया गया। विद्यार्थियों तथा आमजन को नाथपंथ से जुड़ी जानकारी आसानी से प्राप्त हो सके, इसके लिए प्रथम चरण में अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों भाषाओं की नाथ पंथ से संबंधित लगभग 2000 से अधिक पुस्तकें शोधपीठ के पुस्तकालय में रखी गई है। इसके अलावा देश-विदेश में नाथपंथ से संबंधित हुए शोध तथा पुस्तकों की एक अन्य सूची तैयार हो गई है जो शीघ्र ही पुस्तकालय में उपलब्ध हो जाएगी। इस अवसर पर शिक्षा संकाय की संकायाध्यक्ष प्रो. शोभा गौड़, उप-निदेशक डा. कुशल नाथ मिश्रा, सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक ग्रंथालयी डॉ. मनोज द्विवेदी, डॉ. विभाष कुमार मिश्रा, डॉ. महेंद्र सिंह, डॉ. दीपेंद्र मोहन सिंह, कैटेलागर चिन्मयानंद मल्ल सहित सभी शोधार्थी उपस्थित रहे।

ऑनलाईन व्याख्यान

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो0 पूनम टण्डन के संरक्षण में 17 अक्टूबर को 'नाथ योग' विषय पर एक विशिष्ट आनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम संयोजक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा मुख्य वक्ता के सामान्य परिचय के साथ किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 दिनेश कुमार सिंह रहे। उन्होने नाथ पंथ के सृष्टि विज्ञान की चर्चा करते हुए नाथ पंथ के सृष्टि विषयक सिद्धान्त को माडर्न साइंस के युनिफाइड फिल्ड के साथ जोड़ा।

प्रो0 सिंह ने नाथ पंथ को सांख्य दर्शन के साथ जोड़ते हुए कुंडलिनी जागरण पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने इलेक्ट्रो सेलियोग्राफी समेत अनेक यंत्रों का जिक्र किया जिससे नाथ योग के प्राणायाम, समाधि आदि का शरीर पर पड़े प्रभावों को नापा जा सके। प्रो. सिंह ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नाथ पंथ पर शोध करने पर जोर दिया तथा नाथ पंथ के आसन और मुद्राओं पर सैम्पल बनाकर अध्ययन करने का सुझाव दिया। उन्होने जॉन हगलिस समेत विभिन्न विदेशी वैज्ञानिकों का जिक्र किया जिन्होने योग का शरीर पर पड़े प्रभावों का अध्ययन किया है।

इस आनलाइन व्याख्यान में विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्षों, शिक्षकों, छात्र सहित शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी तथा रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार तथा शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, वर्षा रानी, हर्षिता कौशिक, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, कैटेलागर चिन्मयानंद मल्ल उपस्थित रहे। गोरक्षनाथ शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता सहित समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

परिचर्चा का आयोजन

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा परिचर्चा कार्यक्रम संवाद विषय ''नाथ पंथ की ज्ञान परम्परा'' का आयोजन 19 अक्टूबर 2023 को किया गया। इस परिचर्चा में गोरखपुर महानगर के प्रख्यात साहित्यकार प्रो. रामदेव शुक्ल (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गो.वि.वि.), प्रो. डी. के. सिंह (पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राणि विज्ञान, गो.वि.वि.), डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी (पूर्व अधिष्ठाता, वी.ब.सि.पूर्वांचल वि.वि), डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह (पूर्व प्राचार्य, दिग्विजय नाथ पी.जी. कॉलेज) आदि ने शोधपीठ के वैश्विक स्वरुप को विस्तार देने के साथ ही शोधपीठ के संचालन में तीव्रता लाने हेतु अपने-अपने विचार रखे।

इस परिचर्चा में बीज वक्तव्य प्रो. रामदेव शुक्ल ने दिया। उन्होंने कहा कि योग पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। कृष्ण, शिव और गोरखनाथ योग को प्रतिबिम्बित करते हैं। उन्होंने धर्म और विज्ञान के समन्वय पर बल दिया। परिचर्चा के दौरान प्रो. डी. के. सिंह ने योग के वैज्ञानिक प्रयोगों के आलोक में शोध करने पर जोर दिया और इस हेतु आवश्यक संसाधन बी.पी. मशीन, पल्स आक्सीमीटर आदि की आवश्यकता बताया। प्रो. आद्या प्रसाद द्विवेदी ने बोलियों के विकास में नाथ पंथ के योगदान पर प्रकाश डाला। डा. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने नाथ सिद्धान्तों के व्यवहारिक तौर पर प्रचार-प्रसार की आवश्यकता बताते हुये शोध पत्रिका प्रकाशित करने की बात कही।

इस परिचर्चा में यह सहमति बनी कि श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ को दर्शन, भाषा और विज्ञान- इन तीन दिशाओं में शोध कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। नाथ पंथ की परम्परा से भारत की ज्ञान परम्परा को समृद्ध करना चाहिए। समृद्ध पुस्तकालय, संग्रहालय त्रैमासिक शोध पत्रिका की आवश्यकता पर सभी विद्वतजनों ने सहमति व्यक्त किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने समस्त आगंतुकों का स्वागत करते हुए प्रस्ताविकी प्रस्तुत किया। इस परिचर्चा में सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, वर्षा रानी, हर्षिता कौशिक, कुँवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अन्त में सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह ने सभी आगंतुक प्रबुद्धजनों का आभार व्यक्त करते हुये धन्यवाद ज्ञापित किया।

विशेष विभागीय बैठक

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र द्वारा गुरुवार 16 नवम्बर 2023 को शोधपीठ के बैठक कक्ष में एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में निम्न लोग उपस्थित रहे –डॉ. कुशलनाथ मिश्र, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, हर्षिता कौशिक, कुँवर रणन्जय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल। बैठक में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की गई जिसमें शोध अध्येताओं को दिए गए नाथ पंथ से सम्बन्धित शब्दों का विवरण लेखन की निर्धारित अवधि का विस्तार किया गया। साथ ही 30 नवम्बर 2023 को शोधपीठ के स्थापना दिवस (शिलान्यास दिवस) मनाने का निर्णय लिया गया, जिसमें मुख्य अतिथि प्रो. आद्या प्रसाद द्विवेदी रहेंगे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. पूनम टण्डन करेंगी। शोधपीठ की ई-पत्रिका ''गोरख पथ'' प्रकाशन का निर्णय लिया गया। इस पत्रिका के डिजाइन कार्य के लिए एक विशेषज्ञ की मदद लेने का निर्णय हुआ। शोधपीठ में शोधार्थियों द्वारा साप्ताहिक व्याख्यान माला आयोजित करने का भी निर्णय लिया। इस क्रम में पहली व्याख्यान श्रृंखला 18 नवम्बर 2023 को कुँवर रणन्जय सिंह के द्वारा, दिसम्बर 2023 के प्रथम सप्ताह में डॉ. सुनील कुमार द्वारा तथा दिसम्बर द्वितीय सप्ताह में प्रिया सिंह का, तृतीय सप्ताह में हर्षिता कौशिक का तथा चौथे सप्ताह में हर्षवर्धन सिंह के व्याख्यान को निर्धारित किया गया। पुस्तकालय में पुस्तकों की खरीदारी के लिए द्वितीय सूची को जल्द से जल्द पूर्ण करने के लिए निर्देशित किया गया तथा शोधपीठ की फाइल प्रिन्ट कार्य कराने का निर्णय भी लिया गया। योगियों एवं महापुरुषों की जयन्ती सूची तैयार करने का निर्णय लिया गया जिससे जल्द ही शोधपीठ का कैलेंडर जारी की जा सके। दिसम्बर 2023 में प्रस्तावित योग कार्यक्रम के लिए आवश्यक आसन मुद्रा प्राणायाम की सूची भी तैयार करने का निर्देश दिया गया।

विभागीय व्याख्यान श्रृंखला

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखापुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के तत्वावधान में शुरू की गई व्याख्यान श्रृंखला में 18 नवम्बर को शोधपीठ के शोध अध्येता कुँवर रणन्जय सिंह ने महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ के योग दर्शन अर्थात् नाथपंथ की आधारभूत जानकारी के सम्बन्ध में विस्तार से प्रकाश डाला । श्री रणन्जय सिंह ने बताया कि नाथपंथ का प्रमुख सूत्र वाक्य है - ''यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे '' अर्थात् पिण्ड के अन्तर्गत जो कुछ भी मौजूद है, वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का संक्षिप्तीकरण या प्रतीक है। यही नाथपंथ का सारतत्व है।

उक्त विभागीय व्याख्यान श्रृंखला का आरम्भ शोधपीठ के उपनिदेशक प्रो. कुशलनाथ मिश्र ने किया। इस अवसर पर सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मनोज द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ.सुनील कुमार, कैटलागर चिन्मयानन्द मल्ल, हर्षवर्धन सिंह, प्रिया सिंह सहित शोधार्थी उपस्थित थे।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में आयोजित व्याख्यान श्रृंखला में शोधपीठ के शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह ने 30 दिसम्बर 2023 को ''भारत नेपाल सम्बन्ध में नाथ पंथ की भूमिका'' विषय पर पॉवर प्वाइन्ट प्रेजेन्टेशन प्रस्तुत किया। उन्होने भारत नेपाल के सामरिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में नाथ पंथ की सांस्कृतिक भूमिका को रेखांकित किया । उन्होने कहा कि, भारत-चीन के मध्य ''बफर स्टेट'' होने के कारण भारत के लिए सामरिक दृष्टि से सदा महत्वपूर्ण रहा है और दोनों देशों में शताब्दियों पुराने सांस्कृतिक-धार्मिक सम्बन्ध है। श्रीगोरक्ष पीठ का सम्बन्ध नेपाल से अनादिकाल से है। वैश्वीकरण के दौर में नेपाल आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर होने के लिए आर्थिक सहयोग पर आश्रित है, वहीं दक्षिण एशिया में चीन की प्रभुत्ववादी नीति के मद्देनजर नेपाल राष्ट्रीय हितों के लिए प्रथम प्राथमिकता है। ताकि दक्षिण एशिया में शांति, सुरक्षा एवं राजनीतिक स्थिरता विद्यमान रहे और दोनों देशों के सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक संबंधों में पुनः प्रगाढ़ता आये। उक्त विभागीय व्याख्यान श्रृंखला का आरम्भ शोधपीठ के उपनिदेशक प्रो. कुशलनाथ मिश्र ने किया। इस अवसर पर सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मनोज द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ.सुनील कुमार, कैटलागर चिन्मयानन्द मल्ल, प्रिया सिंह सहित समस्त शोधार्थी उपस्थित रहे।

शोधपीठ का स्थापना दिवस

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की 5वें स्थापना दिवस का आयोजन दिनांक 30 नवंबर को किया गया। आयोजन का शुभारम्भ माननीया कुलपति प्रो. पुनम टण्डन के द्वारा गुरु श्रीगोरक्षनाथ के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। इस कार्यक्रम में एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के पूर्व अधिष्ठाता कला संकाय, प्रो. आद्या प्रसाद द्विवेदी रहे। इस कार्यक्रम में शोधपीठ की ई-पत्रिका ''गोरख पथ'' का विमोचन माननीया कुलपति एवं मुख्य अतिथि के द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम में शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने शोधपीठ कें विगत 5 वर्षों की कार्य प्रगति एवं भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. आद्या प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि गोरखनाथ का संदेश महलों से लेकर आम लोगों तक लोकप्रिय हुआ है। गोरखनाथ का आम जनमानस पर प्रभाव महात्मा बुद्ध के बाद सबसे अधिक व्यापक रुप से पड़ा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने गोरखनाथ को विस्मृत कर दिया था। इस शोधपीठ की स्थापना से गोरखपुर विश्वविद्यालय ने इस विस्मरण को दूर कर दिया है। इस शोधपीठ के माध्यम से गोरखनाथ के विभिन्न भाषाओं में बिखरे संदेशों का अध्ययन किया जा सकेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टण्डन द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के शिक्षक शोधपीठ के उन्नयन में अपनी सहभागिता प्रदान करें। यह शोधपीठ भारत का एक उत्कृष्ठ शोध संस्थान के रुप में उभर रहा है।

कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ.सोनल सिंह के द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्षगण, शिक्षकगण, शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, हर्षिता कौशिक, रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल एवं शोध छात्र-छात्रायें उपस्थित रहे।

ई-पत्रिका ''गोरख पथ'' का विमोचन

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ गोरखपुर के 5वें स्थापना दिवस दिनांक 30 नवम्बर के शुभ अवसर पर शोधपीठ की ई-पत्रिका ''गोरख पथ '' का विमोचन कुलपति प्रो. पूनम टण्डन एंव मुख्य अतिथि वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के पूर्व अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. आद्या प्रसाद द्विवेदी द्वारा किया गया। यह पत्रिका वेबसाइट के माध्यम से प्रकाशित की जाएगी। इस पत्रिका में गोरक्षनाथ शोधपीठ में बीते तीन माह में हुई गतिविधियों तथा सम्पादित हुए कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। इस ई-पत्रिका में सम्पादक के रूप में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप-निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र, सह-सम्पादक शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी एवं रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार हैं। सम्पादन सहयोग, वरिष्ठ शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कनिष्ठ शोध अध्येता कुँवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह एवं चिन्मयानन्द मल्ल कर रहें हैं।

पुस्तक प्रदर्शनी

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ गोरखपुर के 5वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर शोधपीठ में दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन मा. कुलपति प्रो. पूनम टंडन के द्वारा किया गया। इसमें साहित्य, विज्ञान, दर्शन, धर्म, योग एवं नाथ सम्प्रदाय से जुड़े पुस्तकों का स्टाल लगाया गया। यह आयोजन डिस्काउंट बुक स्टोर, बक्शीपुर, गोरखपुर के सहयोग से 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर 2023 को किया गया। प्रदर्शनी में छात्रों को नाथ पंथ एवं हिन्दी साहित्य की पुस्तके क्रय करने पर विशेष छूट प्रदान की गई। इस प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टण्डन को बुक स्टॉल की तरफ से स्मृति चिन्ह भेंट की गई। विश्वविद्यालय के अनेक शिक्षकों ने पुस्तकों का चयन किया। डिस्काउंट बुक स्टोर के तरफ से शोधपीठ के उप-निदेशक, सहायक निदेशक तथा सहायक ग्रन्थालयी को सम्मान स्वरूप पुस्तक तथा शॉल भेट की गयी। इस प्रदर्शनी में विभिन्न संकायों के प्राध्यापक एवं छात्रों ने नाथ पंथ से संम्बधित पुस्तकें तथा भारतीय ज्ञान परंपरा की पुस्तकों को क्रय किया।

कार्यशाला-सह-व्याख्यान

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में माननीय कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में दिनांक 9 दिसंबर को विशिष्ट कार्यशाला-सह-व्याख्यान विषय 'योग का मनोविज्ञान 'का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार रहे। इस व्याख्यान का शोधपीठ के आधिकारिक फेसबुक पेज पर लाइव प्रसारण किया गया।

कार्यशाला के वक्ता डॉ. सुनील कुमार ने योग के मनोविज्ञान पर विस्तार से समझाते हुए योग की ज्ञान प्रणाली पर प्रकाश डाला। उन्होंने योगिक मनोविज्ञान को आधुनिक विज्ञान के संदर्भ मे समझाया तथा सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल को योगिक मनोविज्ञान का जनक बताया। डॉ. सुनील ने योग के तत्त्व विज्ञान पर भी आधुनिक विज्ञान से तुलना करते हुए विस्तार से प्रकाश डाला और भारतीय योगिक मनोविज्ञान प्रणाली के पाश्चात्य दार्शनिकों पर पड़े प्रभाव को रेखांकित करते हुए कहा कि सांख्य दर्शन का मनोविज्ञान ही सभी भारतीय दर्शन का आधार है। उन्होंने सांख्य मनोविज्ञान से नाथ दर्शन के पिंड-ब्रह्मांड सिद्धांत के साथ भी तुलना किया।

इस व्याख्यान में विश्वविद्यालय के शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, चिन्मयानंद मल्ल, शोध अध्येता कुंवर रणंजय सिंह, अर्चना, अर्जुन कुमार गुप्ता एवं अन्य विभागों के शोध छात्र एवं परास्नातक कक्षाओं के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। शोधपीठ की अध्येत्री प्रिया सिंह द्वारा मुख्य वक्ता सहित समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

संस्कृत वैश्विक मंच के सचिव का भ्रमण

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर में स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में 8 दिसम्बर 2023 को वैश्विक संस्कृत मंच के संस्थापक सचिव डॉ. राजेश कुमार मिश्र ने शोधपीठ का परिभ्रमण किया। वे शोधपीठ के इन्फ्रास्ट्रक्चर को देखकर उत्साहित हुए, उन्होंने शीघ्र ही शोधपीठ से जुड़कर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा कार्यशाला आयोजित करने का आश्वासन दिया। साथ ही आश्वस्त किया कि वैश्विक संस्कृत मंच श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के साथ मिलकर निरन्तर कार्य करता रहेगा। उन्होंने वैश्विक संस्कृत मंच की कार्य-प्रणाली को विस्तार से बताया। उनके साथ गुरु गोरक्षनाथ संस्कृत पाठशाला, गोरखनाथ मन्दिर से अभिषेक पाण्डेय (सचिव गोरखपुर मण्डल, वै.सं.मंच) के साथ शोधपीठ के उप-निदेशक, सहायक निदेशक तथा सहायक ग्रन्थालयी एवं शोधपीठ के समस्त अध्येतागण उपस्थित थे।

शोध पत्र प्रकाशन

क्र.सं.	नाम	शोध पत्र का शीर्षक	पत्रिका	अंक
1.	डॉ. सोनल सिंह	भारतीय परम्परा में योग का महत्व	योगवाणी	दिसम्बर,2023
2.	डॉ. सुनील कुमार	गोरखनाथ के तत्त्वमीमांसा के सन्दर्भ में योग	विमर्श	सितम्बर, 2023
3.	हर्षवर्धन सिंह	नाथ पंथ एवं गोरखनाथ	विमर्श	सितम्बर, 2023
4.	हर्षवर्धन सिंह	भारत नेपाल सम्बन्ध एवं नाथ पंथ	IJCR	अक्टूबर, 2023
5.	कुंवर रणन्जय सिंह	नाथ पंथ का उद्भव एवं उसकी साधना पद्धति	शोध दृष्टि	नवम्बर, 2023

योग कार्यशाला 'योग का विज्ञान'

कार्यशाला का परिचय

योग प्राचीन भारतीय परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। यह जीवन जीने का एक तरीका है, जिसमें किसी के जीवन में संतुलन और सद्भाव प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक और कलात्मक दोनों दृष्टिकोण शामिल हैं। सौभाग्य से, योग लोगों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार कर सकता है, जिससे उन्हें दिनचर्या का प्रबंधन करने और उनके समग्र विकास को बढ़ाने में मदद मिलती है। योग कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों और लोगों को योग के अभ्यास और शिक्षा से परिचित कराना है, जो उनके शारीरिक लचीलेपन को बढ़ा सकता है तथा शरीर और दिमाग के सम्बन्धों को ठीक रख सकता है। कार्यशाला प्रतिभागियों को योग के माध्यम से तनाव और इसके प्रबंधन पर शिक्षित करने के साथ-साथ स्वास्थ्य और कल्याण के लिए योग अभ्यास और अवधारणा का ज्ञान प्रदान करने के लिए संकल्पित है ।

कार्यशाला का सत्र

कार्यशाला योग का विज्ञान में दो सत्र संचालित किया गया 1.योग प्रशिक्षण, 2. योग पर व्याख्यान। जिससे प्रतिभागियों को योग के व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ-साथ सैद्धान्तिक पक्ष की जानकारी दी गयी । कार्यशाला के दोनो सत्रों का फेसबुक लाइव प्रसारण किया गया।

स्वास्थ्य परीक्षण

इस कार्यशाला में प्रतिदिन योग प्रशिक्षण में पंजीकृत प्रतिभागियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया । स्वास्थ्य परीक्षण मे ब्लड प्रेशर, पल्स, वजन पैरामीटर सम्मिलित किया गया। यह प्रतिभागियों द्वारा पूरित किये गये प्रतिपुष्टी पत्र से व्यक्ति के मानसिक व शारीरिक स्तर को कितना प्रभावित किया है, यह शोधपत्र के माध्यम से प्रकाशित किया जायेगा।

कार्यक्रम विवरण

योग प्रशिक्षण

डॉ. विनय कुमार मल्ल प्रतिदिन 09:00-10:00

व्याख्यान

क्र.	दिनांक	वक्ता	विषय	समय	
1.	17-12-2023	प्रो. दिनेश कुमार सिंह	योग का विज्ञान	10:00-11:00	
2.	18-12-2023	डॉ. सुनील कुमार	आधुनिक युग में योग का आविर्भाव	10:00-11:00	
3.	19-12-2023	प्रो. विजय चहल	प्राणायाम का विज्ञान	03:00-04:00	ऑनलाईन
4.	20-12-2023	डॉ. प्रदीप कुमार चौधरी	योग एवं चिकित्सा विज्ञान	03:00-04:00	
5.	21-12-2023	डॉ. नितेश कुमार पाण्डेय	योग एवं समग्र जीवन	03:00-04:00	
6.	22-12-2023	डॉ. श्याम सुन्दर पाल	योग एवं व्यक्तित्व निर्माण	03:00-04:00	
7.	23-12-2023	प्रो. दिनेश कुमार सिंह	योग का विज्ञान	10:00-11:00	

संरक्षक

प्रो. पूनम टंडन (मा. कुलपति)

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

कार्यशाला निदेशक
डॉ. कुशल नाथ मिश्र
उपनिदेशक, श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

कार्यशाला समन्वयक
डॉ. सोनल सिंह
सहा. निदेशक, श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

कार्यशाला संयोजक
डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी
सहा. ग्रन्थालयी, श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

कार्यशाला सचिव
डॉ. सुनील कुमार
रिसर्च एसोसिएट, श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

आयोजक मण्डल
हर्षवर्धन सिंह (एस. आर. एफ), कु. रणंजय सिंह (जे. आर. एफ)
प्रिया सिंह (जे. आर. एफ), चिन्मयानन्द मल्ल (कैटलॉगर)

योग कार्यशाला 'योग का विज्ञान' उद्घाटन सत्र

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टण्डन के संरक्षण में 17 दिसम्बर को सप्तदिवसीय शीतकालीन योग कार्यशाला विषय 'योग का विज्ञान' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम के मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह एवं शोधपीठ के उप-निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र द्वारा गुरु श्रीगोरक्षनाथ के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। शोधपीठ के उप-निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र के द्वारा एक प्रस्ताविकी के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस कार्यशाला मे सबसे पहले योग के विज्ञान विषय पर प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह का व्याख्यान हुआ।

प्रो. सिंह ने सृष्टि विषयक वैदिक सिद्धांतों की माडर्न साइंस के एटोमिक, न्यूक्लियर, क्वांटम एवं यूनिफाइड फिल्ड के साथ तुलना किया। उन्होंने कहा कि परमात्मा ऊर्जा का केंद्र है। उस परमात्मा से ऊर्जा का प्रवाह हो रहा है। उस ऊर्जा के प्रवाह को पुनः ऊर्जा के केंद्र तक ले जाना ही योग है। उन्होंने यौगिक क्रियाओं के समकालीन पाश्चात्य वैज्ञानिकों विशेषकर क्वांटम वैज्ञानिकों के अध्ययन पर प्रकाश डाला। उन्होंने योग के टरमिनोलॉजी का माडर्न क्वांटम फीजिक्स के टरमीनोलॉजी से तुलना किया तथा बताया कि योग के अभ्यास से चिकित्सीय खर्च कम हो जाता है। उन्होंने कहा कि योग पर जितना काम बाहर हुआ है उतना काम अपने यहाँ नहीं हुआ है। प्रो. सिंह ने आशा व्यक्त किया कि यह शोधपीठ योग के क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण कार्य करेगा।

इस कार्यशाला में एक योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। योग प्रशिक्षण में लगभग 80 लोगों ने भाग लिया। जिसमे एन. एस. एस., योग एवं स्नातक, परास्नातक, शोधछात्र आदि विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के शिक्षकों सहित शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार तथा शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह उपस्थित रहे। गोरक्षनाथ शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा इस कार्यक्रम का संचालन एवं सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कमार द्विवेदी द्वारा मुख्य वक्ता एवं प्रशिक्षक सहित समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस कार्यशाला का फेसबुक लाइव प्रसारण किया गया।

कार्यशाला द्वितीय व्याख्यान 'आधुनिक युग में योग का अविर्भाव '

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टण्डन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय शीतकालीन योग कार्यशाला विषय 'योग का विज्ञान' के दूसरे दिन 18 दिसम्बर 2023 को मुख्य वक्ता महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार रहे।

डॉ. सुनील कुमार ने योग के आधुनिक युग में विकास के इतिहास का विस्तार से विवरण दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान काल मे योग के तीन पक्ष मुख्य है- आध्यात्मिक पक्ष, चिकित्सीय अनुप्रयोग एवं शारीरिक स्वास्थ्य। इन पक्षों पर विस्तृत रूप से चर्चा करते हुए डॉ. कुमार ने कहा कि स्वामी विवेकानंद वैज्ञानिक युग में पाश्चात्य जगत को योग से परिचित कराने वाले पहले व्यक्ति हैं। उनकी पुस्तक राजयोग पाश्चात्य बौद्धिक लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। डॉ. सुनील ने श्यामाचरण लाहिड़ी, स्वामी योगानन्द, श्री अरविन्द, रमण महर्षि के योग से परिचित कराते हुए कृष्णामाचार्य, स्वामी शिवानंद सरस्वती, महेश योगी, बी. एस. आयंगर, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी, स्वामी राम, योगेंद्र योगी आदि के योगदान के बारे विस्तार से प्रकाश डाला तथा योग के चिकित्सीय पक्ष पर स्वामी कैवल्यानंद के योगदान की चर्चा करते हुए योग के चिकित्सीय अनुसंधान पर कार्य करने वाले डाक्टरों मुंबई के डॉ. दाते व डॉ. पटेल, एम्स, नई दिल्ली के डॉ. छिन्ना व डॉ. आनंद, बी. एच. यू., वाराणसी के के. एन. उड्डूपा व डॉ. रामहर्ष सिंह आदि के योगदानों का उल्लेख किया।

कार्यशाला में योग प्रशिक्षण के दूसरे दिन भी विद्यार्थियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण डॉ. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं योग के विद्यार्थियों सहित शोधपीठ के शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह उपस्थित रहे। श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा इस कार्यक्रम का संचालन एवं सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी द्वारा मुख्य वक्ता एवं प्रशिक्षक सहित समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

कार्यशाला तृतीय व्याख्यान 'प्राणायाम का विज्ञान'

सप्तदिवसीय शीतकालीन कार्यशाला 'योग का विज्ञान' 19 दिसम्बर को योग प्रशिक्षण के तीसरे दिन भी विद्यार्थियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। ध्यान, साधना, जलनेति, सूत्रनेति सहित योग प्रशिक्षण में लगभग 85 लोगों ने भाग लिया। जिसमे एन. एस. एस., योग एवं स्नातक, परास्नातक, शोध छात्र आदि विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए। सायं 3 बजे आनलाइन माध्यम से प्राणायाम का विज्ञान विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. विजय चहल, विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर रहे।

प्रो. विजय चहल ने प्राणायाम के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि दुनिया की सबसे जटिल मशीन मानव शरीर है। मानव शरीर मे ऊर्जा नाड़ियों के माध्यम से बहती है। इन नाड़ियों का नियंत्रण प्राणायाम के माध्यम से कर सकते है। उन्होंने प्राणायाम के तीन आयामों बोध, समय और संख्या की चर्चा करते हुए प्राणायाम को श्वास का नियंत्रण एवं विनियमीकरण बताया तथा विज्ञान से प्राणायाम को जोड़ते हुए प्राणायाम की विधि को वैज्ञानिक बताया। सुबह योग प्रशिक्षण ले रहे विद्यार्थियों ने उनसे प्राणायाम से संम्बधित अनेक प्रश्न पूछे जिनका उन्होंने समाधान किया।

इस आनलाइन व्याख्यान में विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रो. अनिल द्विवेदी, डॉ. पूर्णिमा जायसवाल, डॉ. राजेश सिंह सहित शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

कार्यशाला चतुर्थ व्याख्यान 'योग एवं चिकित्सा विज्ञान'

सप्तदिवसीय शीतकालीन कार्यशाला 'योग का विज्ञान' 20 दिसम्बर को योग प्रशिक्षण डॉ. विनय कुमार मल्ल के योगाभ्यास से सत्र का शुभारम्भ हुआ। सायं 3 बजे आनलाइन माध्यम से योग एवं चिकित्सा विज्ञान विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य वक्ता के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. प्रदीप कुमार चौधरी, शतभिषा आयुर्वेद, लखनऊ से रहे।

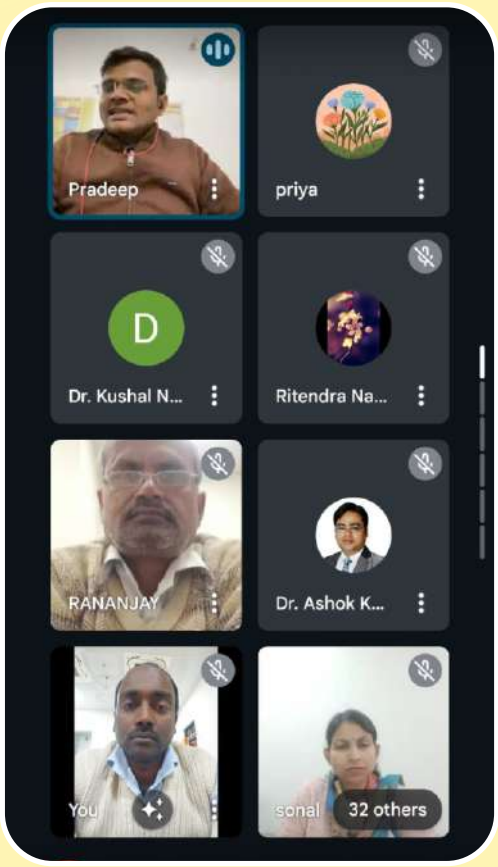

डॉ. प्रदीप कुमार चौधरी ने योग के आयुर्वेदिक सम्बन्धों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने वात, पित्त और कफ के प्रकृति और गुणों को विस्तार से समझाया तथा प्रकृति पर चर्चा करते हुए शारीरिक प्रकृति, बीमारी की प्रकृति, औषधि की प्रकृति, वस्तु की प्रकृति को व्याख्यायित किया। उन्होंने आयुर्वेद से योग को जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि अलग अलग प्रकृति के व्यक्तियों को अलग अलग प्रकार के आसन करना चाहिए। शरीर के प्रकृति के अनुसार योगासनों का चयन करना चाहिए। वात प्रधान लोगों को स्ट्रेचिंग वाले आसन करना चाहिए तथा प्रकृति के अनुसार डाइट लेने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि कुंजल क्रिया कफ का नाश करता है। इसलिए फरवरी में कुंजल क्रिया करना चाहिए। उन्होंने योग का शोध आधुनिक विज्ञान के संदर्भ मे व्याख्या करते हुए कहा कि योग पर माडर्न मेडिकल साइंस के बजाय आयुर्वेद के पैरामीटर पर रिसर्च करना चाहिए। सुबह योग प्रशिक्षण ले विद्यार्थियों सहित श्रोताओं ने उनसे नाड़ी तथा शारीरिक संरचना से संम्बधित अनेक प्रश्न पूछे जिनका उन्होंने समाधान किया।

इस आनलाइन व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। विभिन्न विश्वविद्यालय के शिक्षक सहित शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे।

कार्यशाला पंचम व्याख्यान 'योग एवं समग्र जीवन'

सप्तदिवसीय शीतकालीन कार्यशाला 'योग का विज्ञान' 21 दिसम्बर को योग प्रशिक्षण में लगभग 80 विद्यार्थियों सहित अनेक लोगों ने भाग लिया, जिन्हें डॉ. विनय कुमार मल्ल के द्वारा जलनेति, सूत्रनेति, कपालभांति, शीर्षासन सहित अनेक योगासनों का प्रशिक्षण दिया गया।

सायं 3 बजे आनलाइन माध्यम से योग एवं समग्र जीवन विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. नितेश कुमार पाण्डेय, विभागाध्यक्ष दर्शन विभाग, महात्मा गांधी शती स्मारक डिग्री कालेज, गाजीपुर से रहे।

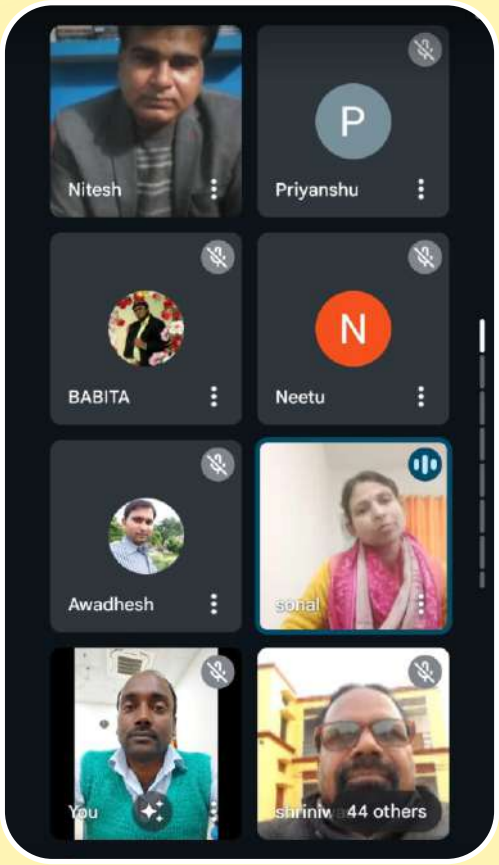

डॉ. नितेश कुमार पाण्डेय ने जार्ज गुरजिएफ एवं श्री अरविन्द के योग के दृष्टि से भारतीय साधना पद्धति एवं पतंजलि के योग को प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि योग एक प्रकार का अनुशासन है, जो हमारे समग्र जीवन को गहराई से प्रभावित करता है। अष्टांग योग के अंतरंग एवं बहिरंग साधन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रत्याहार साधना यम, नियम, आसन, प्राणायाम का परिणाम है। प्रत्याहार सिद्ध होने पर इंद्रियाँ अपने उद्‌भव स्थान पीछे की ओर मुड़ती है। उन्होंने गुरु के महत्त्व की चर्चा करते हुए कहा कि सिद्ध होने के लिए योग की कौन सी विधि साधक के लिए कारगर होगी ये गुरु तय कर लेता है। कार्यशाला मे प्रतिभाग कर रहे श्रीनिवास मिश्र एवं अन्य श्रोताओं ने योग से संम्बधित अनेक प्रश्न पूछे जिनका उन्होंने समाधान किया।

इस आनलाइन व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। विभिन्न विश्वविद्यालय के शिक्षक सहित शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे।

कार्यशाला षष्ठम् व्याख्यान 'योग एवं व्यक्तित्त्व निर्माण'

सप्तदिवसीय शीतकालीन कार्यशाला 'योग का विज्ञान' 22 दिसम्बर को योग प्रशिक्षण के पश्चात सायं 3 बजे आनलाइन माध्यम से योग एवं व्यक्तित्त्व निर्माण विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप-निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र जी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. श्याम सुंदर पाल, सहायक प्रोफेसर, योग विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक से रहे।

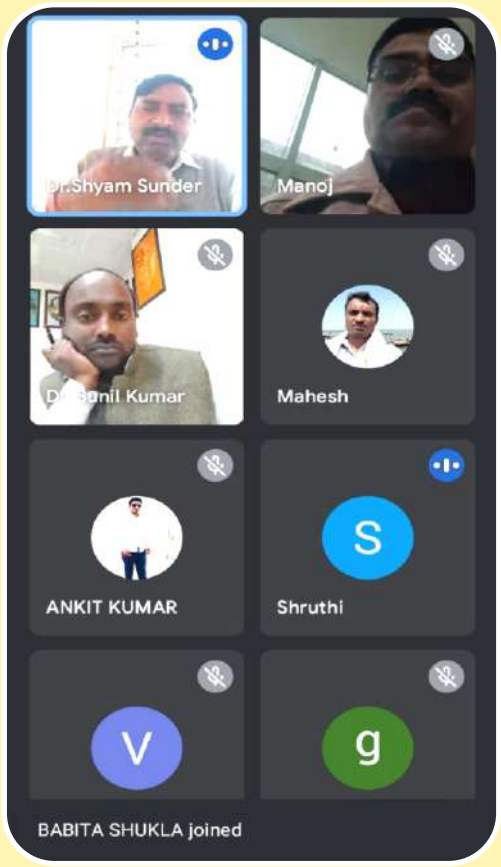

डॉ. श्याम सुंदर पाल ने योग की परिभाषा, इतिहास एवं महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए व्यक्तित्व निर्माण मे योग की भूमिका को स्पष्ट किया। उन्होंने अष्टांग योग की चर्चा करते हुए कहा कि सत्य बोलने पर भय कभी भी उत्पन्न नहीं होता। यही सत्य व्यक्तित्त्व विकास की ओर ले जाता है। उन्होंने अपने उद्बोधन मे मन के अनुशासन पर जोर देते हुए कहा कि मन, मास्टर की-बोर्ड है। मन के माध्यम से ही व्यक्तित्व निर्माण नियंत्रित कर सकते है। बहिरंग एवं अंतरंग साधन की चर्चा करते हुए आपने इससे व्यक्तित्व निर्माण के तरीके सुझाए। इस आनलाइन व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया । विभिन्न विश्वविद्यालय के शिक्षक सहित शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे।

योग कार्यशाला 'योग का विज्ञान' समापन सत्र

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टण्डन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय शीतकालीन कार्यशाला 'योग का विज्ञान' सातवें एवं अन्तिम दिन 23 दिसम्बर को सम्पन्न हो गया। आयोजन का शुभारम्भ माननीया कुलपति प्रो. पुनम टण्डन के द्वारा गुरु गोरक्षनाथ के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्राणि विज्ञान के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. पूनम टंडन के द्वारा किया गया।

कार्यशाला का प्रारम्भ माननीय कुलपति, मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डा. कुशल नाथ मिश्र जी के कार्यशाला के विवरण के साथ प्रारम्भ हुआ। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि आज गीता जयंती है। गीता योग का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। मालवीय जी ने गीता के कर्मयोग को अपने जीवन मे उतार दिया था। विद्यार्थियों को उनके जीवन से इस कर्मयोग को ग्रहण करना चाहिए। उन्होंने कार्यशाला के महत्त्व पर चर्चा करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम चलते रहना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पूनम टण्डन ने कहा कि यह कार्यशाला शोधपीठ का एक बहुत ही अच्छा इनीशीएटिव है जिसमें योग को विज्ञान के साथ जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने योग और स्वास्थ्य परिक्षण की चर्चा करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि योग की उत्पत्ति भारत में हुई है। योग पर हमें और शोध कार्य करना चाहिए और इसके परिणामों को पूरे विश्व को बताना चाहिए। उन्होंने योग को विज्ञान से कनेक्ट करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ की सहायक ग्रन्थालयी डा. मनोज कुमार द्विवेदी के द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. शोभा गौड़, प्रो. अनुभूति दुबे, विभागाध्यक्ष प्रो. शरद मिश्र, प्रो. विजय कुमार, प्रो. अनिल द्विवेदी, प्रो. अशोक कुमार, प्रो. करुणाकर त्रिपाठी, प्रो. निखिल शुक्ल, शिक्षकगण डा. ओ. पी. सिंह, डा. अमित उपाध्याय, डा. पवन कुमार, डा. दुर्गेश पाल, डा. संजय तिवारी, डा. विभाष मिश्र, डा. अंकित तथा शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डा. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल एवं शोध छात्र-छात्रायें उपस्थित रहे।

पं. मदन मोहन मालवीय जयन्ती

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा महामना मदन मोहन मालवीय के 162 वें स्मृति जयंती की पूर्व संध्या पर 23 दिसम्बर को आयोजन सम्पन्न हुआ। आयोजन का शुभारम्भ कुलपति महोदया प्रो. पूनम टंडन के द्वारा मालवीय जी के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विधि विभाग के पूर्व अधिष्ठाता प्रो. जितेन्द्र मिश्र ने मदन मोहन मालवीय जी पर अपने सम्बोधन में कहा कि मालवीय जी युग द्रष्टा थे। उन्होंने समय की आवश्यकताओं के अनुसार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का निर्माण किया, परंतु साथ ही वे फकीर भी रहे। वे स्वतन्त्रता सेनानी के साथ ही मानवतावादी धर्म के प्रवक्ता भी थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को महामना के जीवन से कर्मठता एवं लगन को अपने जीवन में अपनाने का सन्देश दिया। संचालन शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिष्ठातागण प्रो. शोभा गौड़, प्रो. अनुभूति दुबे, विभागाध्यक्ष प्रो. शरद मिश्र, प्रो. विजय कुमार, प्रो. अनिल द्विवेदी, प्रो. अशोक कुमार, प्रो. करुणाकर त्रिपाठी, प्रो. निखिलकांत शुक्ल, डॉ. ओ. पी. सिंह, डॉ. अमित उपाध्याय, डॉ. पवन कुमार, डॉ. दुर्गेश पाल, डॉ. संजय तिवारी, डॉ. विभाष मिश्र, डॉ. अंकित तथा शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल सहित शोध छात्र-छात्रायें उपस्थित रहे।

मीडिया कवरेज

नाथपंथ पर हो सांस्कृतिक व आध्यात्मिक आयोजनः वीसी

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (21 Sept): गोरखपुर यूनिवर्सिटी की वीसी प्रो. पूनम टंडन ने गुरुवार को यूनिवर्सिटी की ओर से महाराणा प्रताप कैंपस में स्थापित महायोगी गुरु गोरखनाथ शोधपीठ का इंस्पेक्शन किया. इसके बाद पीठ के अधिकारियों और शोधकर्ताओं के साथ बैठक की. इस दौरान नाथपंथ पर मौलिक शोध पर जोर देते हुए कहा कि शोधपीठ में नाथपंथ पर आधारित सांस्कृतिक व आध्यात्मिक गतिविधियों का आयोजन किया जाए, शोधपीठ को नाथपीठ के जीवंत केंद्र के रूप में विकसित करें. वीसी ने कहा कि शोधपीठ धर्म, नैतिकता और दर्शन की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में शोधपत्र प्रकाशित होना सुनिश्चित करें. उन्होंने पीठ के अधिकारियों को आश्वस्त किया कि संसाधनों की कमी शीघ्र दूर की जाएगी. बैठक में वीसी के समक्ष स्थापना के बाद से शोधपीठ में हुई गतिविधियों की प्रस्तुति की गई. इस दौरान रजिस्ट्रार प्रो. शांतनु रस्तोगी, पीठ के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. कुशलनाथ मिश्र, असिस्टेंट डायरेक्टर डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज द्विवेदी, डॉ. महेंद्र कुमार सिंह, डॉ. पीपी सिंह आदि मौजूद रहे.

नाथपंथ का जीवंत केंद्र बने गोरक्षनाथ शोधपीठ

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ भवन का निरीक्षण करतीं कुलपति।

छात्रों की समस्याओं को हर दिन समाधान सत्र

जनता के लिए भी खोली जाएगी गोरक्षनाथ शोधपीठ की लाइब्रेरी

गोरखपुर विश्वविद्यालय : पहले चरण में नाथपंथ से जुड़ीं 1500 किताबें मंगवाई गई

संवाद न्यूज एजेंसी

कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने लाइब्रेरी को सुदृढ़ करने के निर्देश

शोधपीठ की गैलरी को बनाया जाएगा आकर्षक

नाथ पंथ की पुस्तकें सभी के लिए उपलब्ध

- कुलपति ने श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ की लाइब्रेरी का किया शुभारंभ
- आम लोग भी नाथ पंथ से जुड़ी जानकारियां प्राप्त कर सकेंगे

गोरखपुर, निज संवाददाता। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विवि में संचालित महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ शोधपीठ की लाइब्रेरी का शुभारंभ सोमवार को कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने किया।

शोधकर्ताओं के लिए गोवि में अब दो हजार पुस्तकें

कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने किया महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की नवनिर्मित लाइब्रेरी का उद्घाटन

दो किस्तों मे जमा होगी मेस फीस, दोगुना हुआ बिजली बिल

योग भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है

गोरखपुर, निज संवाददाता। डीडीयू स्थित गोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा गुरुवार को 'नाथ पंथ की ज्ञान परम्परा' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परिचर्चा में शोधपीठ को दर्शन, भाषा और विज्ञान की दिशा में शोध कार्य को आगे बढ़ाने का सुझाव दिया गया।

मुख्य अतिथि डीडीयू के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं साहित्यकार प्रो. रामदेव शुक्ल ने कहा कि योग पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। कृष्ण, शिव और गोरखनाथ योग को प्रतिबिम्बित करते हैं। उन्होंने धर्म और विज्ञान के समन्वय पर बल दिया।

प्राणी विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. डीके सिंह और प्रो. आद्या प्रसाद द्विवेदी ने बोलियों के विकास में नाथ पंथ के योगदान पर प्रकाश डाला। डॉ शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने नाथ सिद्धांतों के व्यवहारिक तौर पर प्रचार-प्रसार की आवश्यकता बताई। इस मौके पर शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र, सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है योग

GORAKHPUR (19 Oct): गोरखपुर यूनिवर्सिटी स्थित गोरक्षनाथ शोधपीठ की ओर से 'नाथ पंथ की ज्ञान परम्परा' पर परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन गुरुवार को किया गया. इसमें गोविवि के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं साहित्यकार प्रो. रामदेव शुक्ल ने कहा कि योग पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है. कृष्ण, शिव और गोरखनाथ योग को प्रतिबिम्बित करते हैं. उन्होंने धर्म और विज्ञान के समन्वय पर बल दिया. प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. डीके सिंह ने योग के वैज्ञानिक प्रयोगों के आलोक में शोध करने पर जोर दिया. प्रो. आद्या प्रसाद द्विवेदी ने बोलियों के विकास में नाथ पंथ के योगदान पर प्रकाश डाला. इसमें यह सहमति बनी कि गोरक्षनाथ शोधपीठ को दर्शन, भाषा और विज्ञान, इन तीन दिशाओं में शोध कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए. नाथ पंथ की परम्परा से भारत की ज्ञान परम्परा को समृद्ध करना चाहिए. कार्यक्रम में शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, वर्षा रानी, हर्षिता कौशिक, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे.

आमजन के लिए खुली गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ की लाइब्रेरी

संवाद न्यूज एजेंसी

कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने किया पुस्तकालय का शुभारंभ

कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने पुस्तकालय का शुभारंभ किया। संवाद

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में संचालित महायोगी गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ की लाइब्रेरी का शुभारंभ सोमवार को कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने किया। इसी के साथ अंग्रेजी तथा हिंदी भाषाओं की नाथ पंथ से संबंधित लगभग दो हजार से अधिक पुस्तकें आमजन व शोधकर्ताओं के लिए शोधपीठ की लाइब्रेरी में उपलब्ध हो गई हैं। उद्घाटन के साथ ही लाइब्रेरी को आमजन और शोधकर्ताओं के लिए खोल दिया गया।

नवनिर्मित गोरक्षनाथ शोधपीठ भवन के प्रथम तल स्थित इस लाइब्रेरी का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा आम जनमानस को नाथपंथ से जुड़ी जानकारी आसानी से उपलब्ध कराना है।

पूर्व में कुलपति प्रो. टंडन ने शोधपीठ के अपने निरीक्षण के दौरान लाइब्रेरी को आमजन के लिए खोलने के लिए कहा था। शोधपीठ के उपनिदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्रा ने कहा कि कुलपति के दिशा-निर्देश के अनुसार वर्तमान में उपलब्ध इन पुस्तकों के अलावा देश-विदेश में नाथपंथ से संबंधित हुए शोध तथा पुस्तकों की एक अन्य सूची तैयार हो गई है, जो शीघ्र ही लाइब्रेरी में उपलब्ध हो जाएगी। कुलपति ने नाथपंथ पर संग्रहालय के कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए।

योग के प्रतीक हैं कृष्ण, शिव व गोरखनाथ

जासं, गोरखपुर: गोरखपुर विवि परिसर स्थित गोरक्षनाथ शोधपीठ में गुरुवार को नाथ पंथ की ज्ञान परंपरा विषय पर हुई परिचर्चा में गोवि के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो रामदेव शुक्ल ने कहा कि योग पूरे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। कृष्ण, शिव और गोरखनाथ, योग के प्रतीक हैं।

परिचर्चा के दौरान गोवि के प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. डीके सिंह ने योग के वैज्ञानिक प्रयोगों के आलोक में शोध करने पर जोर दिया। प्रो. आद्या प्रसाद द्विवेदी ने बोलियों के विकास में नाथ पंथ के योगदान पर प्रकाश डाला। डा. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने नाथ सिद्धांतों के व्यावहारिक तौर पर प्रचार-प्रसार की आवश्यकता बताते हुए शोध पत्रिका प्रकाशित करने की बात कही।

एकात्म मानवदर्शन है दीनदयाल का विचार

गोरखपुर, निज संवाददाता। पं. दीनदयाल उपाध्याय की 107वीं जयंती पर गोरखपुर विश्वविद्यालय परिवार ने एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

विवि के संवाद भवन में पं दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी का दीप जलाकर शुभारम्भ करते प्रांत प्रचारक सुभाष जी, साथ में कुलपति प्रो पूनम टंडन।

उच्च स्तरीय होगा गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में नाथ पंथ संग्रहालय

राज्य संग्रहालय निदेशालय के पूर्व निदेशक ने किया निरीक्षण

किताबों के लिए परेशान हैं स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों के विद्यार्थी

- केंद्रीय ग्रंथालय ने किताबें देने से किया इन्कार
- विभागों से भी किताबें नहीं मिल रही मामूली

आध्यात्मिक, चिकित्सीय व स्वास्थ्य योग के तीन पक्ष : डॉ. सुनील

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु गोरखनाथ शोधपीठ में योग का विज्ञान विषय पर आयोजित सात दिवसीय योग कार्यशाला के दूसरे दिन योग प्रशिक्षण के बाद पीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार का व्याख्यान हुआ। आधुनिक युग में योग का आविर्भाव विषय पर संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान दौर में योग के तीन पक्ष मुख्य है आध्यात्मिक, चिकित्सीय अनुप्रयोग व स्वास्थ्य। डॉ. सुनील ने श्यामाचरण लाहिड़ी, स्वामी योगानन्द, श्रीअरविन्द, रमण महर्षि के योग के बारे में चर्चा की। योग प्रशिक्षण डॉ. विनय मल्ल द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण में पंजीकृत लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। संवाद

शोधपीठ के कार्यशाला में दिया गया योग प्रशिक्षण

शोधपीठ योग अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करेगा -प्रो.दिनेश कुमार सिंह

मीडिया कवरेज

सांख्य दर्शन का मनोविज्ञान ही सभी भारतीय दर्शन का आधार है : डॉ० सुनील

□ गोरक्षनाथ शोधपीठ में कार्यशाला -सह- व्याख्यान का हुआ आयोजन

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थित महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ शोधपीठ में कुलपति प्रो० पूनम टंडन के संरक्षण में एक विशिष्ट कार्यशाला-सह-व्याख्यान विषय ह्नयोग का मनोविज्ञानह्न का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डा0 कुशलनाथ मिश्र के द्वारा किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ० सुनील कुमार रहे। इस व्याख्यान का शोधपीठ के आधिकारिक फेसबुक पेज पर लाइव प्रसारण किया गया। कार्यशाला के वक्ता डॉ० सुनील कुमार ने योग के मनोविज्ञान पर विस्तार से समझाते हुए योग कि ज्ञान प्रणाली पर प्रकाश डाला।

उन्होंने यौगिक मनोविज्ञान को आधुनिक विज्ञान के संदर्भ मे समझाया। उन्होंने सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल को यौगिक मनोविज्ञान का जनक बताया। उन्होंने योग के तत्व विज्ञान पर भी आधुनिक विज्ञान से तुलना करते हुए विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ० कुमार ने भारतीय यौगिक मनोविज्ञान प्रणाली के पाश्चात्य दार्शनिकों पर पड़े प्रभाव को रेखांकित करते हुए कहा कि सांख्य दर्शन का मनोविज्ञान ही सभी भारतीय दर्शन का आधार है। उन्होंने सांख्य मनोविज्ञान से नाथ दर्शन के पिंड-ब्रह्मांड सिद्धांत के साथ भी तुलना किया। इस व्याख्यान में विश्वविद्यालय के शोधपीठ की सहायक निदेशिका डा0 सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डा0 मनोज कमार द्विवेदी, चिन्मयानंद मल्ल, शोध अध्येता कुंवर रणंजय सिंह, अर्चना एवं अन्य विभागों के शोध छात्र एवं परास्नातक कक्षाओं के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

सांख्य दर्शन का मनोविज्ञान ही सभी भारतीय दर्शन का आधार है

गोरखपुर (एसएनबी)। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थित महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ में कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में एक विशिष्ट कार्यशाला-सह-व्याख्यान विषय योग का मनोविज्ञान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार ने योग के मनोविज्ञान पर विस्तार से समझाते हुए योग कि ज्ञान प्रणाली पर प्रकाश डाला। उन्होंने योगिक मनोविज्ञान को आधुनिक विज्ञान के संदर्भ मे समझाया। उन्होंने सांख्य मनोविज्ञान से नाथ दर्शन के पिंड-ब्रह्मांड सिद्धांत के साथ भी तुलना किया। इस व्याख्यान में विश्वविद्यालय के शोधपीठ की सहायक निदेशिका डा. सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डा. मनोज कमार द्विवेदी, चिन्मयानंद मल्ल, शोध अध्येता कुंवर रणंजय सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। इस व्याख्यान का शोधपीठ के आधिकारिक फेसबुक पेज पर लाइव प्रसारण किया गया।

भारतीय दर्शन का आधार है साख्य दर्शन का मनोविज्ञान

गोरखपुर : गोरखपुर विश्वविद्यालय के गोरक्षनाथ शोधपीठ मे शनिवार को 'योग का मनोविज्ञान' विषय पर विशिष्ट कार्यशाला-सह-व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डा. सुनील कुमार रहे। उन्होंने योग के मनोविज्ञान पर विस्तार से समझाते हुए साख्य दर्शन के प्रणेता कपिल को यौगिक मनोविज्ञान का जनक बताया। योग के तत्व विज्ञान की आधुनिक विज्ञान से तुलना करते हुए विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डा. कुशलनाथ मिश्र ने किया। इस दौरान शोधपीठ की सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डा. मनोज कमार द्विवेदी, चिन्मयानंद मल्ल आदि मौजूद रहे। जागरण

'सांख्य दर्शन का मनोविज्ञान ही भारतीय दर्शन का आधार'

[illegible]

शोधपीठ में योग कार्यशाला में व्याख्यान आयोजित

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो0 पूनम टण्डन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय शीतकालीन योग कार्यशाला विषय ह्नयोग का विज्ञानह्न का आज सोमवार को दूसरे दिन भी भव्य आयोजन किया गया। यह कार्यशाला 23 दिसम्बर तक चलेगा।

कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र द्वारा गुरु गोरक्षनाथ के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा एक प्रस्ताविकी के साथ कार्यक्रम की शुरूआत की गई। आज के व्याख्यान के मुख्य वक्ता महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार रहे।

इस कार्यशाला मे योग प्रशिक्षण के बाद आधुनिक युग मे योग का आविर्भाव विषय पर डॉ. सुनील कुमार का व्याख्यान हुआ।

गोरक्षनाथ शोधपीठ में विशिष्ट कार्यशाला का हुआ आयोजन

- सांख्य दर्शन का मनोविज्ञान ही सभी भारतीय दर्शन का आधार है-डॉ.सुनील कुमार
- कपिल ही योगिक मनोविज्ञान के जनक हैं-डॉ.सुनील कुमार

मुख्य संवाददाता(शाश्वत राम तिवारी)

गोरखपुर।सुपर फास्ट टाइम्स

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थित महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ में माननीय कुलपति प्रो०पूनम टंडन के संरक्षण में एक विशिष्ट कार्यशाला-सह-व्याख्यान विषय ह्नयोग का मनोविज्ञानह्न का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ.कुशलनाथ मिश्र के द्वारा किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ०सुनील कुमार रहे।इस व्याख्यान के शोधपीठ के आधिकारिक फेसबुक पेज पर लाइव प्रसारण किया गया। कार्यशाला के वक्ता डॉ० सुनील कुमार ने योग के मनोविज्ञान पर विस्तार से समझाते हुए योग कि ज्ञान प्रणाली पर प्रकाश डाला। उन्होंने योगिक मनोविज्ञान को आधुनिक विज्ञान के संदर्भ मे समझाया व सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल को योगिक मनोविज्ञान का जनक बताया और योग के तत्व विज्ञान पर भी आधुनिक विज्ञान से तुलना करते हुए विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ० कुमार ने भारतीय योगिक मनोविज्ञान प्रणाली के बाद दार्शनिकों पर पड़े प्रभाव को रेखांकित करते हुए कहा कि सांख्य दर्शन का मनोविज्ञान ही सभी भारतीय दर्शन का आधार है।उन्होंने सांख्य मनोविज्ञान से नाथ दर्शन के पिंड-ब्रह्मांड सिद्धांत के साथ भी तुलना किया। इस व्याख्यान में विश्वविद्यालय के शोधपीठ की सहायक निदेशिका डा.सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डा.मनोज कमार द्विवेदी, चिन्मयानंद मल्ल, शोध अध्येता कुंवर रणंजय सिंह, अर्चना एवं अन्य विभागों के शोध छात्र एवं परास्नातक कक्षाओं के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।शोधपीठ की प्रिया सिंह द्वारा मुख्य वक्ता सहित समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

योग कार्यशाला के दूसरे दिन भी आयोजित हुआ योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

वर्तमान काल में योग के तीन पक्ष मुख्य है-आध्यात्मिक पक्ष, चिकित्सीय अनुप्रयोग एवं शारीरिक स्वास्थ्य - डॉ.सुनील कुमार

मुख्य संवाददाता(शाश्वत राम तिवारी)

गोरखपुर।सुपर फास्ट टाइम्स

[illegible]

ऊर्जा के प्रवाह को पुनः ऊर्जा के केंद्र तक ले जाना ही योग : प्रो.डीके

[illegible]

महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ में हुआ योग कार्यशाला का आयोजन

मनोविज्ञान ही भारतीय दर्शन का आधार

[illegible]

आयुर्वेद के मानक पर करें योग पर शोध

जासं, गोरखपुर : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में "योग का विज्ञान" विषय पर आयोजित सात दिवसीय कार्यशाला के चौथे दिन मुख्य वक्ता डा. प्रदीप कुमार चौधरी ने आयुर्वेद और योग के संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने वात, पित्त और कफ की प्रकृति और गुणों को समझाया। आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में योग पर शोध के संदर्भ में उन्होंने कहा कि योग पर शोध आयुर्वेद के मानक पर होना चाहिए।

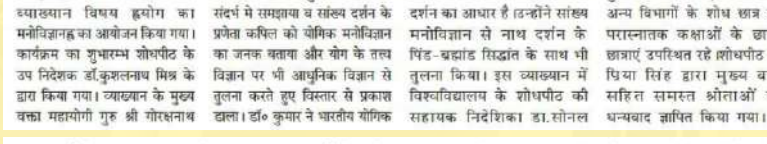

शीतकालीन कार्यशाला 'योग का विज्ञान' में योग करते शिक्षक। संवाद

योग पर आधुनिक विज्ञान के जगह आयुर्वेद के पैरामीटर पर हो खोज-डॉ.प्रदीप कुमार चौधरी

शरीर के प्रकृति के अनुसार करें योगासनों का चयन

मुख्य संवाददाता(शाश्वत राम तिवारी)

गोरखपुर।सुपर फास्ट टाइम्स

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर में स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो.पूनम टण्डन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय शीतकालीन कार्यशाला ह्नयोग का विज्ञानह्न में चौथे दिन भी विद्यार्थियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण डा.विनय कुमार मल्ल के द्वारा दिया गया। योग प्रशिक्षण में लगभग 80 लोगों ने भाग लिया। जिसमे एनएसएस, योग एवं स्नातक, परास्नातक, शोध छात्र आदि विद्यार्थी एवं अन्य लोग सम्मिलित हुए। शाम 3 बजे ऑनलाइन माध्यम से योग एवं चिकित्सा विज्ञान विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि

के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप-निदेशक डॉ.कुशलनाथ मिश्र के द्वारा हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ.प्रदीप कुमार चौधरी, शतभिषा आयुर्वेद, लखनऊ से रहे। डॉ.प्रदीप कुमार चौधरी ने योग के आयुर्वेदिक सम्बन्धों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने वात, पित्त और कफ के प्रकृति और गुणों को विस्तार से समझाया। प्रकृति पर चर्चा करते हुए शारीरिक प्रकृति, बीमारी की प्रकृति, औषधि की प्रकृति, वस्तु की प्रकृति को व्याख्यायित किया। उन्होंने आयुर्वेद से योग को जोड़ते हुए कहा कि अलग- अलग प्रकृति के व्यक्तियों को अलग- अलग प्रकार के आसन करना चाहिए। शरीर के प्रकृति के अनुसार योगासनों का चयन करना चाहिए। वात प्रधान लोगों को स्ट्रेचिंग वाले आसन करना चाहिए। उन्होंने प्रकृति के अनुसार डाइट लेने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि कुंजल क्रिया कफ का नाश करता है। इसलिए फरवरी मे कुंजल क्रिया करना चाहिए। उन्होंने योग का शोध आधुनिक विज्ञान के संदर्भ मे व्याख्या करते हुए कहा कि योग पर आधुनिक विज्ञान के बजाय आयुर्वेद के पैरामीटर पर शोध करना चाहिए। सुबह योग प्रशिक्षण लेने वाले विद्यार्थियों सहित श्रोताओं ने उनसे नाड़ी तथा शारीरिक संरचना से संबंधित अनेक प्रश्न पूछे जिनका उन्होंने समाधान किया। ऑनलाइन व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ.सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ.सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। विभिन्न विश्वविद्यालय के शिक्षक सहित शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ.मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे।

योग पर माडर्न साइंस की बजाय आयुर्वेद के पैरामीटर पर हो रिसर्च : डॉ. प्रदीप

गोरखपुर (एसएनबी)। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो0 पूनम टण्डन के संरक्षण में चल रहे सप्तदिवसीय शीतकालीन कार्यशाला योग का विज्ञान में चौथे दिन योग प्रशिक्षण डा. विनय कुमार मल्ल द्वारा दिया गया। योग प्रशिक्षण में लगभग 80 लोगों ने भाग लिया।

शोधपीठ में योग कार्यशाला के चौथे दिन आनलाईन व्याख्यान के साथ आयोजित हुआ योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

अपराह्न में आनलाईन व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डा. कुशलनाथ मिश्र ने किया। मुख्य वक्ता डा. प्रदीप कुमार चौधरी, शतभिषा आयुर्वेद, लखनऊ ने योग के आयुर्वेदिक संबंधों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने वात, पित्त और कफ की प्रकृति और गुणों को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि योग पर माडर्न साइंस के बजाय आयुर्वेद के पैरामीटर पर रिसर्च करना चाहिए। सुबह योग प्रशिक्षण ले विद्यार्थियों सहित श्रोताओं ने उनसे नाड़ी तथा शारीरिक संरचना से संबंधित अनेक प्रश्न पूछे जिनका उन्होंने समाधान किया। संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डा. सुनील कुमार ने व धन्यवाद ज्ञापन शोधपीठ के सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह ने किया। इस दौरान विभिन्न विश्वविद्यालय के शिक्षक सहित शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डा. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल आदि उपस्थित रहे।

कार्यालय- नगर

सभी सम्बन्धित एवं एतद्द्वारा
पत्र के विरुद्ध अगर कोई आपत्ति हो
में उपलब्ध करा दें, अन्यथा बाद मि

क्र. सं.	दर्ज होने वाले व्यक्ति का नाम
1	अमरदीप, दीपक पटेल, गोवि इश्वर चन्द्र चौधरी

मीडिया कवरेज

योग जीवन जीने का अनुशासन है: डॉ. नितेश कुमार पाण्डेय

योग को विज्ञान से जोड़ने की जरूरत : प्रो. पूनम टण्डन

गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ में सप्तदिवसीय योग कार्यशाला का समापन

योग कार्यशाला के साथ मनायी गयी मालवीय जयंती

योग को विज्ञान से जोड़ने की जरूरत

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में चल रहे सप्त दिवसीय कार्यशाला 'योग का विज्ञान' का शनिवार को समापन हो गया। इस अवसर पर पं. मदन मोहन मालवीय की 162वीं जयंती समारोह का आयोजन भी किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि यह कार्यशाला योग को विज्ञान के साथ जोड़ने का का अच्छा प्रयास है। योग पर हमें और शोध कार्य करना चाहिए और इसके परिणामों को पूरे विश्व को बताना चाहिए। साथ ही उन्होंने योग को विज्ञान से जोड़े जाने की जरूरत पर जोर दिया। मुख्य वक्ता प्रो. जितेंद्र मिश्र ने मालवीय के जीवन पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने कहा कि गीता योग का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। अंतिम दिन डॉ विनय कुमार मल्ल ने योग का प्रशिक्षण दिया।

स्वागत शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने, संचालन सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज द्विवेदी और आभार ज्ञापन डॉ. सोनल सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रो. शोभा गौड़, प्रो. अनुभूति दुबे, प्रो. शरद मिश्र, प्रो. विजय कुमार, प्रो. अनिल द्विवेदी, प्रो. अशोक कुमार सहित काफी संख्या में

डीडीयू:योग कार्यशाला के साथ मनाया गया मालवीय जयंती

योग को विज्ञान से जोड़ने की आवश्यकता -प्रो.पूनम टंडन

योग को विज्ञान से जोड़ने की जरूरत : कुलपति

गोरखनाथ शोधपीठ में योग कार्यशाला के साथ मनाई गई मालवीय जयंती

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ में चल रहे सात दिवसीय शीतकालीन कार्यशाला 'योग का विज्ञान' का समापन शनिवार को हुआ। साथ ही महामना पं. मदन मोहन मालवीय की 162वीं जयंती भी मनाई गई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि यह कार्यशाला योग को विज्ञान के साथ जोड़ने का का अच्छा प्रयास है। कहा कि योग पर हमें और शोध कार्य करना चाहिए और इसके परिणामों को पूरे विश्व को बताना चाहिए। साथ ही योग को विज्ञान से कनेक्ट करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कुलपति प्रो. पूनम टंडन।

इसके अलावा मुख्य वक्ता प्रो. जितेंद्र मिश्र ने संबोधन में कहा कि पं. मदन मोहन मालवीय ने युग की आवश्यकताओं के अनुसार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का निर्माण किया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने कहा कि गीता योग का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। मालवीय ने गीता के कर्मयोग को अपने जीवन में उतार दिया था। विद्यार्थियों को उनके जीवन से कर्मयोग को ग्रहण करना चाहिए।

कार्यशाला के इस अंतिम दिन डॉ. विनय कुमार मल्ल के द्वारा योग प्रशिक्षण दिया गया। इसमें करीब 80 विद्यार्थियों सहित अन्य लोगों ने भाग लिया। अतिथियों का स्वागत शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने किया।

संचालन शोधपीठ के सहायक ग्रंथालयीय डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी और आभार ज्ञापन सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह ने किया।

नलाइन व्याख्यान के साथ ग्रोजित हुआ योग प्रशिक्षण

। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित 5 श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. पूनम टण्डन के चल रहे सप्तदिवसीय शीतकालीन कार्यशाला योग का तीसरे दिन योग प्रशिक्षण योग प्रशिक्षक डा. विनय कुमार दिया गया। ध्यान, साधना, जलनेति, सूत्रनेति सहित योग लगभग 85 लोगों ने भाग लिया।

हन 3 वजे आनलाइन माध्यम से प्राणायाम का विज्ञान विषय ना आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के साथ शोधपीठ के उप निदेशक डा. कुशलनाथ मिश्र ने । वक्ता प्रो. विजय चहल, विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों पर विस्तार से प्रकाश ने कहा कि दुनिया की सबसे जटिल मशीन मानव शरीर है। मे ऊर्जा नाड़ियों के माध्यम से बहती है। इन नाड़ियों का गायाम के माध्यम से कर सकते है। व्याख्यान में य के शिक्षक प्रो. अनिल द्विवेदी, डा. पूर्णिमा जायसवाल, डा. सहित शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डा. मनोज कुमार र्व एसोसिएट डा. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, 1 सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे। शोधपीठ निदेशक डा. सोनल सिंह ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

योग को विज्ञान से जोड़ने की जरूरत : कुलपति

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखनाथ शोधपीठ में योग कार्यशाला के साथ मनाई गई मालवीय जयंती

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ में शीतकालीन कार्यशाला 'योग का विज्ञान' का समापन शनिवार को हुआ। साथ ही महामना पं. मदन मोहन मालवीय की 162वीं जयंती भी मनाई गई। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि यह कार्यशाला योग को विज्ञान के साथ जोड़ने का का अच्छा प्रयास है। मुख्य वक्ता प्रो. जितेंद्र मिश्र ने संबोधन में कहा कि पं. मदन मोहन मालवीय ने युग की आवश्यकताओं के अनुसार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का निर्माण किया। मुख्य अतिथि प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने कहा कि गीता योग का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। डॉ. विनय कुमार मल्ल के द्वारा योग प्रशिक्षण दिया गया। उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. सोनल सिंह, प्रो. शोभा गौड़, प्रो. अनुभूति दुबे, प्रो. शरद मिश्र आदि मौजूद रहे।

मारे समग्र जीवन को गहराई से प्रभावित करता है योग

(एसएनबी)। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी नाथ शोधपीठ द्वारा सप्तदिवसीय शीतकालीन कार्यशाला योग का विज्ञान में भी विद्यार्थियों की काफी संख्या रही। योग प्रशिक्षण में लगभग 80 विद्यार्थियों क लोगों ने भाग लिया। जिन्हें डा. विनय कुमार मल्ल के द्वारा जलनेति, सूत्रनेति क योगासनों का प्रशिक्षण दिया गया।

3 वजे आनलाइन माध्यम से योग एवं समग्र जीवन विषय पर कार्यशाला की गई। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. नितेश कुमार पाण्डेय, विभागाध्यक्ष दर्शन त्मा गांधी शती स्मारक डिग्री कॉलेज, गाजीपुर रहे। डॉ.पाण्डेय ने जार्ज वं महर्षि अरविन्द के योग के दृष्टि से भारतीय साधना पद्धति एवं पतंजलि के तुत किया। उन्होंने कहा कि योग एक प्रकार का अनुशासन है, जो हमारे समग्र हराई से प्रभावित करता है। उन्होंने अष्टांग योग के अंतरंग एवं वहिरंग साधन से प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रत्याहार साधना यम, नियम, आसन, प्राणायाम है। प्रत्याहार सिद्ध होने पर इंद्रियां अपने उद्भव स्थान पीछे की ओर मुड़ती है। ने प्रतिभाग कर रहे श्रीनिवास मिश्र एवं अन्य श्रोताओं ने योग से संबंधित अनेक नका उन्होंने समाधान किया।

ऑनलाइन व्याख्यान के साथ आयोजित हुआ योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

दुनिया की सबसे जटिल मशीन मानव शरीर- प्रो.विजय चहल

आध्यात्मिक, चिकित्सीय व स्वास्थ्य योग के तीन पक्ष

जासं, गोरखपुर : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ में 'योग का विज्ञान' विषय पर आयोजित सात दिवसीय योग कार्यशाला के दूसरे दिन योग प्रशिक्षण के बाद पीठ के रिसर्च एसोसिएट डा. सुनील कुमार का व्याख्यान हुआ। आधुनिक युग में योग का आविर्भाव विषय पर संबोधित करते हुए डा. सुनील ने कहा कि वर्तमान दौर में योग के तीन पक्ष मुख्य है- आध्यात्मिक, चिकित्सीय अनुप्रयोग व स्वास्थ्य। उन्होंने इन पक्षों पर बिस्तृत रूप से चर्चा की।

योग पर आयुर्वेद के मानक पर हो रिसर्च : डॉ. प्रदीप

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में चल रहे सात दिवसीय शीतकालीन कार्यशाला 'योग का विज्ञान' में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। डॉ. विनय कुमार मल्ल ने योग प्रशिक्षण दिया। शाम में ऑनलाइन माध्यम से योग एवं चिकित्सा विज्ञान विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई।

मुख्य वक्ता डॉ. प्रदीप कुमार चौधरी ने योग के आयुर्वेदिक संबंधों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने वात, पित्त और कफ की प्रकृति और गुणों को विस्तार से समझाया। योग का शोध आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में व्याख्या करते हुए कहा कि योग पर माडर्न साइंस की बजाय आयुर्वेद के पैरामीटर पर रिसर्च करना चाहिए। मुख्य अतिथि का स्वागत शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने किया। संवाद

ग्रोग के दौरान किया ।या स्वास्थ्य परीक्षण

(एसएनबी)। दीनदयाल ोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित रु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा । शीतकालीन योग कार्यशाला

ज्ञान के अन्तर्गत सोमवार को । योग किया। इस अवसर पर एक ो आयोजित हुआ, साथ ही योग का योग के दौरान शामिल लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र द्वारा गुरु गोरक्षनाथ के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ एक प्रस्ताविकी के साथ प्रारंभ हुआ। कार्यशाला मे योग प्रशिक्षण के बाद आधुनिक युग में योग का आविर्भाव विषय पर शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएटडॉ. सुनील कुमार ने योग के आधुनिक युग में विकास के इतिहास का विस्तार से विवरण दिया।

कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर–273009 (उ.प्र.)
दूरभाष : +91-551-2201577
ई–मेल : vcddugu@gmail.com

कुलसचिव
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर–273009 (उ.प्र.)
दूरभाष : +91-551-2340363
ई–मेल : registrarddugu@gmail.com

उप–निदेशक
महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर–273009 (उ.प्र.)
दूरभाष : +91-9651834400
ई–मेल : mygsgsp@gmail.com

mygsgsp@gmail.com
https://whatsapp.com/channel/0029Va9xg0560eBmO8jUhe0n
https://www.facebook.com/mygsgsp/
https://www.facebook.com/profile.php?id=61551992553606
https://twitter.com/Gorakshpeeth
https://www.youtube.com/@mygsgsp
+91- 9532752575, 9415848512, 9935823171, 9415286885

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University

A State University Established Under Uttar Pradesh State University Act 1973
(Accredited A++ by NAAC)